(पवन- दूतिका)

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

(क) बैठी खिन्ना यक दिवस वे गेह में थीं अकेली ।
आके आँसू दृग-युगल में थे धरा को भिगोते ।
आई धीरे इस सदन में पुष्प सद्गंध को ले ।
प्रातः वाली सुपवन इसी काल वातायनों से ।।
संतापों को विपुल बढ़ता देख के दुःखिता हो ।
धीरे बोली स-दुख उससे श्रीमती राधिका यों ।
प्यारी प्रातः पवन इतना क्यों मुझे है सताती ।
क्या तू भी है कलुषित हुई काल की क्रूरता से ।।

प्रश्न-(i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए ।

उत्तर-(i) प्रस्तुत पद्यांश अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' द्वारा रचित महाकाव्य 'प्रिय प्रवास' से हमारी पाठ्य-पुस्तक में संकलित 'पवन-दूतिका' शीर्षक से उद्धृत है।

(ii) राधा ने प्रातःकालीन वायु से दुःखित होकर क्या कहा ?

(ii) राधा ने कहा- मुझे इस प्रकार क्यों सता रही हो? क्या तुम भी समय की कठोरता से दूषित हो गई हो? क्या तुझ पर भी समय की क्रूरता का प्रभाव पड़ गया है।

Gyansindhu Coaching Classes

(iii) उपर्युक्त पद्यांश में किस प्रसंग का चित्रण हुआ है ?

(iii) प्रस्तुत पद्यांश में राधा की मनोदशा का भावपूर्ण चित्रण किया गया है।

(iv) इस पद्यांश में कौन-सा छन्द है ?

(iv) प्रस्तुत पद्यांश में 'मन्दाक्रान्ता' छन्द है ।

(v) पद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(v) रेखांकित अंश की व्याख्या - राधा दुःखित होकर कहती है कि हे प्रातःकालीन पवन! तू क्यों मुझे इस प्रकार सता तू रही है? क्या तुम भी समय की कठोरता के कारण कलुषित विचारों वाली हो गई हो ? क्या तुझ पर भी समय की क्रूरता का प्रभाव पड़ गया है?

(ख) लज्जाशीला पथिक महिला जो कहीं दृष्टि आये।
होने देना विकृत वसना तो न तू सुन्दरी को ।
जो थोड़ी भी श्रमित वह हो गोद ले श्रान्ति खोना ।
होंठों की औ कमल मुख की म्लानतायें मिटाना ।।
कोई क्लान्ता कृषक ललना खेत में जो दिखावे ।
धीरे धीरे परस उसकी क्लान्तियों को मिटाना ।
जाता कोई जलद यदि हो व्योम में तो उसे ला ।
छाया द्वारा सुखित करना, तप्त भूतांगना को ।।

प्रश्न- (i) दिये गये पद्यांश के कवि एवं कविता का नाम लिखिए।

उपर्युक्त

Gyanendra Coaching Classes

(ii) राधा पवन दूतिका से राह में पथिकों के साथ कैसा व्यवहार करने को कहती है ?

(ii) राधा पवन- दूतिका से कह रही है कि यदि मार्ग में कोई लज्जाशील स्त्री दिखाई दे तो उसके वस्त्र को मत उड़ाना, थकी हुई प्रतीत हो तो उसकी थकावट को दूर कर देना ।

(iii) इस पद्यांश में कवि ने किसका चित्रण किया है?

(iii) प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने एक ओर राधा की विरह व्यथा का चित्रण किया है तो दूसरी ओर उन्हें समाज की पीड़ा से भी व्याकुल दिखाया है।

(iv) इस पद्यांश में कौन-सा अलंकार है ?

(iv) प्रस्तुत पद्यांश में मानवीकरण एवं उपमा अलंकार है ।

(v) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

(v) रेखांकित अंश की व्याख्या - राधा पवन को समझाती है कि तुझे मार्ग में ब्रजभूमि की अत्यन्त लज्जाशील महिलाएँ दिखाई देंगी। अतः तुझे उनका मान-सम्मान करते हुए ही आगे बढ़ना है तू कहीं अपनी चंचलता का प्रदर्शन करते हुए उनके वस्त्रों को उड़ाकर उनके कोमलांगों को अनावृत मत कर देना।

Gyansindhu Coaching Classes

(ग) जो प्यारे मंजु उपवन या वाटिका में खड़े हों।
छिद्रों में जा क्वणित करना वेणु सा कीचकों को ।
यों होवेगी सुरति उनको सर्व गोपांगना की ।
जो हैं वंशी श्रवण-रुचि से दीर्घ उत्कण्ठ होतीं ।।
ला के फूले कमलदल को श्याम के सामने ही।
थोड़ा थोड़ा विपुल जल में व्यग्र हो हो डुबाना ।
यों देना ऐ भगिनि जतला एक अंभोजनेत्रा ।
आँखों को हो विरह-विधुरा वारि में बोरती है ।।

प्रश्न-(i) उपर्युक्त पद्यांश के शीर्षक एवं रचनाकार का नाम लिखिए।

- शीर्षक - 'पवन दूतिका'
- रचनाकार -अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

(ii) राधा अपनी आँखों को आँसुओं में डुबाये क्यों रखती है ?

उत्तर- राधा अपनी आँखों को आँसुओं में इसलिए डुबाये रखती है जिससे श्रीकृष्ण को उसकी वियोगावस्था का आभास हो ।

उत्तर- कवि ने इस पद्यांश में किस प्रसंग को व्यक्त किया है ?

(iii) प्रस्तुत पद्यांश में वियोगिनी बाला राधा के दुःख और संताप को व्यक्त किया गया है।

(iv) उपर्युक्त पद्यांश किस छन्द में है ?

उत्तर- प्रस्तुत पद्यांश 'मन्दाक्रान्ता छन्द में है ।

Gyansindhu Coaching Classes

(v) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- रेखांकित अंश की व्याख्या - राधा पवन दूतिका से कहती है, हे बहिन! इस प्रकार उन्हें बतला देना कि कमल जैसी नेत्रोंवाली राधा आपके वियोग में दुःखी होकर अपनी आँखों को अश्रुपूरित रखती है।

(घ) यों प्यारे को विदित करके सर्व मेरी व्यथायें ।
धीरे धीरे वहन कर के पाँव की धूलि लाना ।
थोड़ी सी भी चरण-रज जो ला न देगी हमें तू ।
हा! कैसे तो व्यथित चित को बोध मैं दे सकूँगी ॥
पूरी होवें न यदि तुझसे अन्य बातें हमारी ।
तो तू मेरी विनय इतनी मान ले और चली जा ।
छू के प्यारे कमल-पग को प्यार के साथ आ जा।
जी जाऊँगी हृदयतल में मैं तुझी को लगाके ॥

प्रश्न-(i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए ।

(ii) राधा पवन से क्या प्रार्थना करती है ?

उत्तर- राधा पवन से प्रार्थना करते हुए कहती है कि मेरे विरह की सारी बातें कृष्ण से कहना और वापस आते समय उनकी चरण धूलि ला देना जिसे अपने माथे पर चढ़ाकर दुःखी मन को ढाढ़स बँधा सकूँ। यदि ये बातें पूर्ण न हो सकें तो मेरे प्रियतम के पास जाकर कमल रूपी पैरों को छूकर आ जाना। विरह में मृतप्राय तुझे अपने हृदय से लगाकर पुनः जीवन धारण कर लूँगी।

Gyansindhu Coaching Classes

(iii) इस पद्यांश में किस प्रसंग को व्यक्त किया गया है ?

उत्तर- प्रस्तुत पद्यांश में राधिका की पवित्र और सच्ची प्रेम भावना को व्यक्त किया गया है।

(IV) इस पद्याँश कौन-सा अलंकार है ?

उत्तर- प्रस्तुत पद्यांश में पुनरुक्तिप्रकाश एवं मानवीकरण अलंकार है।

(v) रेखांकित पंक्ति की व्याख्या कीजिए ।

उत्तर- रेखांकित अंश की व्याख्या - राधा पवन से निवेदन करती है कि यदि तुम मेरे सन्देश को किसी भी रूप में श्रीकृष्ण तक न पहुँचा सको तो तुम मेरे उस प्राणप्रिय श्रीकृष्ण के कमलवत् रूपी चरणों का स्पर्श करके मेरे पास लौट आना। मैं तुझे अपने हृदय से लगाकर अपने प्रियतम के स्पर्श-सुख का अनुभव करके प्राण शक्ति धारण कर लूँ ।

(ङ) कोई प्यारा कुसुम कुम्हला गेह में जो पड़ा हो।
तो प्यारे के चरण पर ला डाल देना उसी को ।।
यों देना ऐ पवन बतला फूल सी एक बाला ।।
म्लाना हो हो कमल-पग को चूमना चाहती है ।

प्रश्न-(i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए ।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या - राधा पवन से कहती है कि यदि उनके घर में कोई कुम्हलाया फूल पड़ा हो तो उनके चरणों में डालकर यह बताने की कृपा करना कि फूल जैसी एक सुकोमल बाला दुःखित होकर आपके चरणों को चूमना चाहती है।

Gyansindhu Coaching Classes

(iii) मुरझाए हुए पुष्प की उपमा किससे की गयी है?

(iii) मुरझाए हुए पुष्प की उपमा वियोग में दुःखी राधा से की गई है।

(iv) श्रीकृष्ण के कमलवत् चरणों को कौन चूमना चाहता हैं ?

(iv) कृष्ण के कमलवत् चरणों को अपरोक्ष रूप से राधा चूमना चाहती है।

(v) राधा पवन दूतिका से मुरझाए हुए पुष्प को कहाँ डाल देने के लिए कह रही है ?

(v) राधा पवन - दूतिका से मुरझाये हुए पुष्प को कृष्ण के चरणों में डाल देने को कह रही है।

(च) साँचे ढाला सकल वपु है दिव्य सौन्दर्यशाली ।
सत्पुष्पों-सी सुरभि उसकी प्राण-सम्पोषिका है।
दोनों कन्धे वृषभ वर-से हैं बड़े ही सजीले ।
लम्बी बाँहें कलभ कर-सी शक्ति की पेटिका हैं।
राजाओं-सा शिर पर लसा दिव्य आपीड़ होगा।
शोभा होगी उभय श्रुति में स्वर्ण के कुण्डलों की ।
नाना रत्नाकलित भुज में केयूर होंगे।
मोतीमाला लसित उनका कम्बु सा कण्ठ होगा।

प्रश्न-(i) उपर्युक्त पद्यांश के कवि एवं कविता का नाम लिखिए।

उत्तर- उपर्युक्त

Gyansindhu Coaching Classes

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- रेखांकित अंश की व्याख्या - राधा पवन दूतिका से कहती है उनके (श्रीकृष्ण के) सिर पर राजाओं के जैसा अलौकिक कान्तियुक्त मुकुट सुशोभित होगा। उसके दोनों कानों में तुझे सुन्दर स्वर्ण-कुण्डल शोभा बिखराते हम दृष्टिगोचर होंगे। वे अपनी दोनों भुजाओं में विभिन्न रत्नों से परिपूर्ण सुन्दर भुजबन्ध धारण किए मिलेंगे। इसके साथ हो उनकी शंख जैसी सुडौल गर्दन में मोतियों की माला शोभित होती दिखेगी।

(iii) नायिका ने कृष्ण की क्या-क्या विशेषताएँ बतायी हैं

उत्तर- नायिका के अनुसार श्रीकृष्ण की निम्न विशेषताएँ हैं- 1. देवताओं जैसी अलौकिक कान्ति 2. सुगन्ध युक्त शरीर 3. साँड़ के समान कन्धों वाला, 4. हाथी के सूँड़ जैसी भुजाओं वाला ।

(iv) प्रस्तुत पद्यावतरण में नायिका ने किसे प्राण पोषिका के समान बताया है?

उत्तर- प्रस्तुत पद्यावतरण में नायिका ने उत्तम पुष्प के सदृश श्रीकृष्ण के शरीर से निकलने वाली सुगन्ध को प्राण पोषिका के समान बताया है।

(v) प्रस्तुत कविता में किस छन्द का उल्लेख किया गया है ?

उत्तर- प्रस्तुत कविता में मन्दाक्रान्ता छन्द है ।

(छ) नीले फूले कमल दल सी गात की श्यामता है।
पीला प्यारा वसन कटि में पैन्हते हैं फबीला ।
छूटी काली अलक मुख की कान्ति को है बढ़ाती ।

Gyansindhu Coaching Classes

सद्वस्त्रों में नवल तन की फूटती सी प्रभा है ॥
साँचे ढाला सकल वपु है दिव्य सौन्दर्यशाली।
सत्पुष्पों-सी सुरभि उसकी प्राण- संपोषिका है।
दोनों कंधे वृषभ-वर से हैं बड़े ही सजीले ।
लम्बी बाँहें कलभ-कर सी शक्ति की पेटिका हैं ॥

प्रश्न-(i) राधा पवन से कृष्ण को पहचानने का क्या उपाय बताती है ?

उत्तर- राधा पवन से कृष्ण को पहचानने का उपाय बताते हुए कहती है कि उनके शरीर की श्यामल छवि नीले कमल पुष्प के सदृश है और अपने शरीर पर अत्यन्त आकर्षक पीला सुन्दर वस्त्र अपनी कमर में धारण किये रहते हैं।

(ii) 'अलक' तथा 'सकल' शब्द का अर्थ लिखिए।

उत्तर- 'अलक' शब्द का अर्थ है- बालों की लट तथा 'सकल' का अर्थ 'सम्पूर्ण या सारा' है।

(iii) 'कलभ-कर-सी' में कौन-सा अलंकार है ?

उत्तर- 'कलभ कर-सी' में उपमा अलंकार है ।

(iv) रेखांकित अंश का भावार्थ लिखिए।

उत्तर- रेखांकित अंश की व्याख्या - श्रीकृष्ण के दोनों कन्धे श्रेष्ठ साँड़ के समान विशाल और बलिष्ठ हैं। उनकी भुजाएँ हाथी के सूँड़ के समान शक्ति की पिटारी हैं।

Gyansindhu Coaching Classes

(v) पाठ का शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।

उत्तर- प्रस्तुत पाठ का शीर्षक 'पवन- दूतिका' और इसके रचनाकार (कवि) अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' हैं।

(ज) सूखी जाती मलिन लतिका जो धरा में पड़ी हो।
तो पाँवों के निकट उसको श्याम के ला गिराना ।
यों सीधे से प्रकट करना प्रीति से वंचिता हो ।
मेरा होना अति मलिन औ सूखते नित्य जाना ॥
कोई पत्ता नवल तरु का पीत जो हो रहा हो।
तो प्यारे के दृग युगल के सामने ला उसे ही ।
धीरे धीरे सँभल रखना औ उन्हें यों बताना।
पीला होना प्रबल दुख से प्रोषिता सा हमारा ॥

प्रश्न- (i) राधा पवन से पृथ्वी पर पड़ी हुई लता को क्या करने के लिए कहती हैं ?

उत्तर- राधा पवन से पृथ्वी पर पड़ी हुई को श्रीकृष्ण के पाँव के पास गिरा देने को कहती है।

(ii) सूखी लता से राधा कृष्ण को क्या संदेश देना चाहती है?

उत्तर- सूखी लता से राधा कृष्ण को यह संदेश देना चाहती है कि मैं प्रेम से रहित होकर किस प्रकार नित्य ही सूखती तथा मलिन होती जा रही हूँ।

(iii) पीले पत्ते को श्रीकृष्ण के सामने लाने से राधा का क्या अभिप्राय है?

Gyansindhu Coaching Classes

उत्तर- पीले पत्ते को श्रीकृष्ण के सामने लाने से राधा का अभिप्राय यह है कि मैं भी प्रोषितपतिका नायिका के समान पीली पड़ती जा रही हूँ।

(iv) उपर्युक्त पद्यांश की रेखांकित पंक्तियों की व्याख्या कीजिए ।
उत्तर- रेखांकित अंश की व्याख्या - राधा कहती है कि हे पवन! यदि किसी नए वृक्ष का कोई पत्ता पीला पड़ गया हो तो उसे प्रिय के सामने धीरे से रख देना और उन्हें बताना कि उसी प्रकार मैं (राधा) भी प्रोषित पतिका नायिका के समान पीली पड़ती जा रही हूँ ।

(v) पाठ का शीर्षक तथा रचयिता के नाम का उल्लेख कीजिए।
उत्तर- प्रस्तुत पद्यांश के पाठ का शीर्षक 'पवन- दूतिका' तथा इसके रचयिता अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' हैं।

(vi) उपर्युक्त उद्धरणों में व्यक्त रस का नाम लिखकर उसके स्थायी भाव का उल्लेख कीजिए ।
उत्तर- प्रस्तुत उद्धरण में 'वियोग श्रृंगार रस है तथा इसका स्थायी भाव 'रति' है।

(vii) 'प्रोषिता - सा' में कौन-सा अलंकार है ?
उत्तर- 'प्रोषिता सा' में 'उपमा' अलंकार है।

(viii) राधा सूखी और मलिन लतिका के माध्यम से पवनदूतिका के द्वारा क्या संदेश दिलाना चाहती है?

Gyansindhu Coaching Classes

उत्तर- राधा सूखी और मलिन लतिका के माध्यम से पवन - दूतिका के द्वारा यह संदेश देना चाहती है कि राधा भी आपके वियोग में सूखती और मलिन होती जा रही है।

.....

Gyansindhu Coaching Classes